बिखरे हो जीवन के रंग सारे छाए हों राहों पर आँधियारे पतझड़ - सा चाहे यह जीवन लगे
पर अभी कुछ मधुमास बाकी है उम्मीद का दामन मत छुड़ा कि अभी आस बाकी है।

बुजुर्गों के लिए...

अध्ययन हेतु प्राप्त आर्थिक सहायता से असहाय विधवा महिला की पुत्री के चेहरे पर खुशी

तारांशु

मासिक जून, 2014

मूल्य - 5 रुपये वर्ष 2, अंक 11, पृ.सं. 20 संपादक :- कल्पना गोयल

- आशीर्वाद -

डॉ. कैलाश 'मानव'
संस्थापक एवं प्रबन्ध न्यासी,
नारायण सेवा संस्थान (ट्रस्ट), उदयपुर

श्री एन.पी. भार्गव
मुख्य संरक्षक, तारा संस्थान,
उद्योगपति एवं समाजसेवी, दिल्ली

- आभार -

श्रीमती शमा - श्री रमेश सचदेवा
संरक्षक,
उद्योगपति एवं समाजसेवी, दिल्ली

श्री सत्यभूषण जैन
संरक्षक,
प्रमुख समाजसेवी, दिल्ली

स्वाभिमानी होना एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है...

स्वाभिमान अभिमान नहीं है। भिन्नता ही नहीं है, विरोध है। अभियान दूसरे से अपने को श्रेष्ठ समझने का भाव है। अभिमान एक रोग है। किस–किस से अपने को श्रेष्ठ समझोगे? कोई सुंदर है ज्यादा, कोई स्वस्थ है ज्यादा, कोई प्रतिभाशाली है, कोई मेधावी है। अभिमानी जीवन भर दुख ही दुख झेलता है। जगह–जगह चोटें ही चाटें खाता है। उसका जीवन घाव और घाव से भरता चला जाता है। दूसरे से तुलना करने में अभिमान है। और मैं दूसरे से श्रेष्ठ हूँ, ऐसी धारणा में अभिमान है।

स्वाभिमान बात ही और है। स्वाभिमान अत्यंत विनम्र है। दूसरे से श्रेष्ठ होने का कोई सवाल नहीं है। सब अपनी – अपनी जगह अनूठे हैं। यह स्वाभिमान की स्वीकृति है कि कोई किसी से न ऊपर है और कोई किसी से न नीचे है। एक छोटा सा घास का फूल और आकाश का बड़े से बड़ा तारा, इस अस्तित्व में दोनों का समान मूल्य है। यह छोटा सा घास का फूल भी न होगा तो अस्तित्व में कुछ कमी हो जाएगी, जो महातारा भी पूरी नहीं कर सकता।

स्वाभिमान इस बात की स्वीकृति है कि यहाँ प्रत्येक अनूठा है। और कोई दौड़ नहीं है, कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है, कोई महत्वाकांक्षा नहीं है। हाँ, यदि कोई दूसरा तुम पर आक्रामक हो... स्वाभिमान में कोई आक्रमण नहीं है, लेकिन अगर कोई दूसरा तुम पर आक्रामक हो तो स्वाभिमान में संघर्ष की क्षमता है – दूसरे को छोटा दिखाने के लिए नहीं, दूसरे का आक्रमण गलत है, हर आक्रमण गलत है, यह सिद्ध करने को।

स्वाभिमान की कोई अकड़ नहीं है। सीधा – सादा है। लेकिन बड़ी से बड़ी शक्ति दुनिया की स्वाभिमानी व्यक्ति को नीचा नहीं दिखा सकती। यह बड़ा अनूठा राज है। स्वाभिमानी व्यक्ति विनम्र है, इतना विनम्र है कि वह खुद ही सबसे पीछे खड़ा है। अब उसको और कहाँ पीछे पहुँचाओगे?

स्वाभिमानी होना एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है। अभिमानी होनी एक सांसारिक बीमारी है। स्वाभिमान में न तो स्व है और न अभिमान है। यही भाषा की मुश्किल है कि यहाँ जो कचरा है, उसे प्रकट करने के लिए तो हमारे पास शब्द होते हैं? लेकिन जो हीरे हैं, उनको प्रकट करने के लिए हमारे पास शब्द भी नहीं होते। तो हमें शब्द बनाने पड़ते हैं।

अभिमान ठीक–ठीक प्रकट करता है उस दशा को, जो अहंकारी की होती है। लेकिन स्वाभिमान खतरनाक शब्द हो गया। क्योंकि इसमें अभिमान आधा है। डर है कि तुम कहीं स्वाभिमान की परिभाषा अभिमान से न कर लो। कहीं तुम अभिमान को ही स्वाभिमान न समझने लगो। और इसमें हमने 'स्व' भी जोड़ दिया। कहीं स्व का अर्थ अहंकार न हो जाए।

जोड़ा है स्व जिन्होंने, बहुत सोच कर जोड़ा है। मगर जोड़ने वाले से क्या होता है?जिन्होंने इसमें स्व जोड़ा है, उनका अर्थ है कि स्वाभिमानी केवल वही हो सकता है, जो स्वयं को जानता हो जिसने स्वयं को पहचाना हो। ऐसे व्यक्ति में अभिमान हो ही नहीं सकता। और ऐसा व्यक्ति किसी दूसरे को भी अपने ऊपर अभिमान थोपने का मौका नहीं दे सकता। न खुद गलती करेगा, न दूसरे को गलती करने देगा।

लेकिन भाषा की कमजोरियाँ हैं। अभिमान भी गलत शब्द है और स्व के साथ भी खतरा है कि उसका कहीं अर्थ तुम अहंकार न समझ लो। आमतौर से स्वाभिमान में और अभिमान में कोई फर्क नहीं है। आमतौर से मेरा मतलब है, तुम्हारे मनों में – दोनों में कोई फर्क नहीं है। इतना ही फर्क है कि तुम अपने अभिमान को स्वाभिमान कहते हो, और दूसरे आदमी के स्वाभिमान को अभिमान कहते हो। बस इतना ही फर्क है। लेकिन अगर मेरी बात तुम्हें समझ में आ गई हो, तो बारीक जरूर है, मगर समझ में न आए इतनी असंभव नहीं है।

तारांशु – वर्ष 2, अंक – 11, मई, 2014

अनुक्रमणिका

विषय		पृष्ठ क्रमांक
स्वाभिमानी होना एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है	–	*02*
अनुक्रमणिका	–	*03*
यह हक़ीकत है	–	*04*
बूढ़ी आँखों को बेटी का इन्तजार	–	*05*
गौरी योजना	–	*06*
तृप्ति योजना	–	*07*
आनन्द वृद्धाश्रम से	–	*08*
मोतियाबिन्द जाँच - ऑपरेशन शिविर	–	*09-13*
तारा संस्थान में अतिथि	–	*14*
तारा परिवार का सौभाग्य	–	*15*
जो मिला, कितना मूल्यवान है!	–	*16*
Tara Contacts	–	*17*
We are grateful to them	–	*18*
REC facilitate, cataract surgeries	–	*19*

आशीर्वाद डॉ. कैलाश 'मानव', संस्थापक - नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

श्रीमती कल्पना गोयल अपने पूज्य पिता डॉ. कैलाश 'मानव' की सन्निधि में,

तारांशु मासिक, जून, 2014

'तारांषु' – स्वत्वाधिकारी, श्रीमती कल्पना गोयल द्वारा 240–ए, हिरण मगरी, सेक्टर – 6, उदयपुर (राज.) 313002 से प्रकाषित तथा मुद्रक श्री सत्यप्रकाष कुमार शर्मा द्वारा सागर ऑफसेट प्रिन्टर, इण्डिया प्रा. लि. प्लॉट नं. 518, इकोटेच – III, उद्योग केन्द्र एक्टेंषन – II, ग्रेटर नोएडा, गौतम बुद्ध नगर (उत्तर प्रदेष) में मुद्रित, सम्पादक – श्रीमती कल्पना गोयल

यह हक़ीकत है...

तारा संस्थान मुख्यतया बुजुर्गों के लिए कार्य कर रहा है, लेकिन ''गौरी योजना'' – जो हमारे मूल उद्देश्य से थोड़ी अलग है, को अपने करीब पाती हूँ... शायद इसलिए कि एक स्त्री होने के नाते स्त्रियों के दुख का एहसास अधिक होता हो। गौरी योजना में अभी हम.... विधवा महिलाओं को मासिक 1000 रु. देते हैं और हर महिला से यदि आप पूछें कि आप इस राशि का उपयोग क्या करेंगे, तो सभी का जवाब होता है, बच्चों की पढ़ाई में..... आनन्द वृद्धाश्रम और तृप्ति योजना के कई बुजुर्गों की हकीकत मुझे पता है, जिन्होंने अपने बच्चों के लिए सब कुछ किया और जब बच्चों की सबसे ज्यादा जरूरत थी तभी बच्चों ने उन्हें छोड़ दिया... माँ का प्रेम या त्याग तो बच्चे के लिए निःश्छल होता है, बिना किसी कामना के। तारा संस्थान में जीवन की ये ही दो सच्चाई हम देख रहे हैं, एक तरफ वो माँ है जो बिना पिता के बच्चों के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर रही है, और वहीं दूसरी ओर वे बच्चे हैं, जो अपने माता–पिता को घर से भी निकाल देते हैं....

ऐसा क्यों होता है, इसका कोई उत्तर किसी के पास नहीं है। मुझे पता है कि कोई माँ इस डर से कि बच्चा उसके बुढ़ापे में उसका साथ देगा कि नहीं, ये सोचकर अपने लिए नहीं करेगी, उसकी प्राथमिकता हमेशा बच्चे ही रहेंगे। लेकिन जिन सताए हुए बुजुर्गों से जब बात हुई तो एक समानता सबमें मुझे दिखाई दी, कि सभी लोग सामान्यतः भोले थे, जिन्होंने या तो ये सोचकर अपना सब कुछ, जैसे – घर, एफडी, पीएफ आदि बच्चों को दे दिया कि ये तो बच्चों के लिए ही है या कई बार बच्चों ने धोखे से अपने नाम करवा लिया और फिर अपने माता–पिता को घर से निकाल दिया और ये बातें शत–प्रतिशत सही है। 'मुझे भी लगता था कि फिल्मों में ही ऐसा होता है लेकिन अब लगता है ''अवतार'' या ''बागबान'' तो हमारे ही समाज से निकली हैं। बस अपने अनुभव से यही सुझाव दे सकती हूँ कि थोड़ा सा स्मार्ट सभी हों, बच्चों को सब कुछ देना ही तो है, पर मृत्यु के उपरांत उनके नाम करें ता अच्छा होगा....'

कल्पना गोयल

चूम लेना उसकी हथेलियाँ, किसी आगाज से पहले,
सुना है माँ हथेली में, दुआएँ रखती हैं...
तेरे हर सफ़र में, सरगोशी होगी रहमतों की,
सुना है माँ लबों पे, सदायें रखती हैं...
उसे बताते ही ज़ख्मों का, दर्द काफ़ूर हो जायेगा,
सुना है अपनी फूंक में वो, ठण्डी हवायें रखती हैं...
गौर कर तू गुनाहगार, होकर भी मासूम है,... सुना है अपनी नेकी देरक? वो खतायें रखती है...
कभी सोचा क्यूँ तेरे रास्ते, कोई आफ़त नहीं आती?
सुना है अपनी नज़र में वो, चारों दिशायें रखती हैं...
डर मत तुझे, बुरी नज़र नहीं लगेगी,
सुना है तुझसे दूर वो, सारी बलायें रखती हैं....
तू अकेला है सफर पे, कैसे मान लिया तूने?
सुना है खुदा की जगह वो, तुझपे निगाहें रखती हैं...
सुना है माँ हथेली में दुआएँ रखती हैं....!!!

बशीरन की बूढ़ी आँखों को बेटी का इंतजार....

17 मई, 2014 को कल्पना जी के ऑफिस में एक 28–30 साल का युवा आया नाम परवेज था उन्होंने कहा कि मैं अपनी माँ की आँख दिखाने आया हूँ लेकिन मुझे पता चला है कि यहाँ तक वृद्धाश्रम है तो हमारे पास एक वृद्ध महिला है उनको यहाँ रख सकते हैं क्या?

अभी तारा के आनन्द वृद्धाश्रम में 4–5 बेड खाली हैं तो उन्हें कहा गया कि आप महिला को ला सकते हैं.....

उसी दिन दोपहर को परवेज बशीरन बाई को लेकर आ गए और बशीरन बाई की जो कहानी हमने सुनी वह रोंगटे खड़े करने वाली थी। बशीरन बाई लगभग 80 साल की वृद्धा हैं। कमर पूरी तरह झुकी हुई है एकदम कमजोर शरीर हैं। बशीरन बाई उदयपुर में एक मस्जिद के पास अपनी बेटी आमना व दामाद रमजानी के साथ रह रही थीं। उनका दामाद व पुत्री कहीं मजदूरी करते थे और उनके पति नत्थे खाँ वर्षों पहले गुजर गए थे। तारा में आने के 4–5 दिन पहले बशीरन बाई के दामाद और बेटी सारा सामान लेकर चले गए। घर में कुछ भी नहीं छोड़ा बस बशीरन बाई को अकेले खाली घर में, बिना कुछ कहे छोड़ गए। बशीरन बाई को कुछ समझ में ही नहीं आया उन्हें लगा कि बेटी दामाद वापस आएगे और ये उम्मीद वो अब भी लगा कर बैठी हैं....

उनसे हमने पूछा कि आपके घर में कुछ भी नहीं छोड़ा तो आपने खाया क्या तो वे कहती हैं कि मेरे लिए रोटी बनाकर गई थी आमना। आमना की बनाई रोटियों के सहारे बशीरन बाई ने एक दो दिन गुजारे, फिर वे बेटी दामाद को ढूँढ़ने खुद ही निकल गईं। किसी आटो वाले ने उन्हें परवेज भाई के घर के आस पास कहीं छोड़ दिया। परवेज भाई ने इंसानियत दिखाते हुए उन्हें अपने घर में रखा लेकिन जब उन्हें 'तारा' के आनन्द वृद्धाश्रम का पता चला तो वे उन्हें यहाँ ले आए।

यदि बशीरन बाई उस घर से बाहर नहीं निकलती तो क्या होता ये सोच ही डरा देती है क्योंकि 2–3 सूखी रोटी से कितने दिन जीवित रहती और घर में कोई सामान नहीं तो खाती क्या और उनका शरीर इतना जर्जर है कि सामान होता तो भी कुछ बना ही नहीं सकती थी।

कोई बच्चा इतना निर्मम कैसे हो सकता है कि बूढ़ी माँ का घर में अकेले भूखों भरने के लिए छोड़ दे.... या फिर वे यह मानकर चले गए कि ''जिसका कोई नहीं दुनिया में उसका ईश्वर होता है'' वहीं दूसरी ओर परवेज या कुछ और लोग जिन्होंने सड़क पर छोड़ी गई बशीरन बाई को अपने घर में शरण दी और उन्हें आनन्द वृद्धाश्रम पहुँचाया.... एक ही दिन में अमानवीयता और मानवता की अति देख ली....

अभी बशीरन बाई आनन्द वृद्धाश्रम में रह रही हैं और उन्हें आमना का इंतजार है उन्हें जब भी पूछते हैं कि कैसे हो, वो कहती है, ''मुझे घर जाना है वो आमना और रमजानी कहीं गए हैं, वो आने वाले होंगे...'' उन्हें कोई नहीं समझा सकता कि जब आमना घर का सारा सामान ले गईं तो वापस कैसे आएगी, हम चुप रहते हैं उनकी उम्मीद तोड़ भी कैसे सकते हैं....

जब भी बशीरन बाई से मिलते हैं बस यही ख्याल आता है कि क्या माता–पिता किसी भी मजबूरी में बच्चे को मरने के लिए छोड़ देते है? नहीं.. .. तो बच्चों ने ऐसा कैसे कर दिया....

दीपेश मित्तल

गौरी योजना

गाँव – गोपी महका, पोस्ट – खरसिया (छ.ग.) निवासी कुमारी बाई राठौर की आयु 34 वर्ष है। इनके पति श्री विशाल राठौर का फरवरी 2011 में निधन हो गया। इनके 11 एवम् 7 वर्ष के 2 पुत्र हैं। घर में वृद्ध सास भी है, जो चलफिर नहीं सकती है। परिवार के इन सदस्यों के भरण – पोषण की जिम्मेदारी कुमारी बाई राठौर पर है। ये किसी तरह आस–पड़ौस के घरों में झाड़ु–पौछा करके बड़ी कठिनाई से घर चला पा रही हैं। बच्चों के शिक्षा की भी कोई समुचित व्यवस्था नहीं है। तारा संस्थान के छ.ग. प्रतिनिधि श्री बजरंग बंसल ने कुमारी बाई की परेशानियों से तारा संस्थान की संस्थापक श्रीमती कल्पना गोयल को अगवत करवाया। श्रीमती कल्पना गोयल ने इन्हें गौरी योजना में सम्मिलित कर 1000 रुपया प्रतिमाह नकद सहायता स्वीकृत की है, जो प्रतिमाह इनके बैंक खाते में भेजी जा रही है। इस अल्प सहायता से कुमारी बाई को कुछ राहत मिली है।

कमलेश सिंघल, सुभाष चौक, ऋषिकेश (उत्तराखण्ड) की निवासी हैं। इनकी आयु – 31 वर्ष है। इनके 2.5 वर्ष की एक पुत्री है। बीमारी के कारण इनके पति श्री अजय सिंघल का सितम्बर, 2012 में निधन हो गया। इनके पास जो कुछ भी जमा पैसा था, वह सारा पति के इलाज में खर्च कर दिया, पर उन्हें बचाया नहीं जा सका। अब ये अपने पिता के आश्रय में रह रही हैं। इनके पिता चौकीदार के काम से सिर्फ1500 रुपया महीना कमा पाते हैं और परिवार में कमलेश की एक विकलांग छोटी बहन भी है। पिता की अल्प–आय और एक निजी विद्यालय में सहायक के रूप में काम करते कमलेश को जो कुछ भी थोड़ी सी आय होती है, उससे स्वयं और बच्ची का भरण – पोषण नहीं हो पा रहा। तारा संस्थान के साधक श्री विकास चोरासिया को इनकी हालत की जानकारी मिली और श्री विकास ने श्रीमती कल्पना गोयल को इनकी जानकारी दी। श्रीमती कल्पना गोयल ने तारा संस्थान की गौरी सेवा योजना के अन्तर्गत कमलेश सिंघल को 1000 रुपया प्रतिमाह नकद सहायता देना प्रारम्भ किया है। यह राशि इनके बैंक खाते में प्रतिमाह भेजी जा रही है। इससे कमलेश की परेशानियाँ कुछ कम हुई है।

मानवीय संवेदनाओं को आहत करने वाली असहाय विधवा महिलाओं की पीड़ाओं को कुछ कम करने के प्रयास के प्रति यदि आप भी इच्छुक हों, तो कृपया प्रति विधवा महिला 1000 रु. प्रतिमाह की दर से 01 माह, 03 माह, 06 माह, 01 वर्ष या इससे भी अधिक अवधि के लिए अपना दान–सहयोग 'तारा संस्थान' को प्रेषित करने का अनुग्रह करें।

तृप्ति योजना

गीता बाई की आयु 33 वर्ष है। ये गाँव सिंहाड़, तहसील – वल्लभनगर, उदयपुर की रहने वाली हैं। इनके पति श्री केशुलाल की बीमारी से मृत्यु हो गई। इनके 6, 4 व 2 वर्ष के तीन पुत्र इन्हीं पर आश्रित हैं। आय का कोई साधन नहीं है। ये छोटी–मोटी मजदूरी कर अपना घर चलाती हैं, पर गाँव में मजदूरी कभी–कभार ही मिलती है, और बच्चों को अपर्याप्त भोजन की पीड़ा से गुजरना पड़ता है। इनकी हालत अत्यन्त दयनीय है। तारा संस्थान को जब इनकी जानकारी मिली तो इन्हें तृप्ति योजना के अन्तर्गत खाद्य सामग्री एवम् 300 रुपया नकद प्रतिमाह सहायता देना प्रारम्भ किया है। इस सहायता से गीता बाई को अपने बच्चों को भूखे सोने की पीड़ा से कुछ राहत मिली है। ऐसे अनेक असहाय महिला – पुरुष तृप्ति योजना में सहायता के लिए प्रतीक्षारत हैं और उन्हें उदार दान–दाताओं से सहयोग की अपेक्षा है।

श्री रामलाल मेघवाल की आयु 67 वर्ष है। ये गाँव – सिंहाड़, तहसील – वल्लभनगर (उदयपुर) के निवासी हैं। ये अशिक्षित हैं और उनके परिवार मे 8 से 16 वर्ष आयु की पाँच सन्तानें हैं। इनके एक विकलांग पुत्र है, इनके आवास की भी कोई व्यवस्था नहीं है। घर पुराना होकर ढह गया है। घर के बाहर खुली जगह पर बरामदा है, जिसमें ये अपने आश्रितों के साथ रहते हैं। गाँव में कभी–कभार कोई मजदूरी मिल जाती है। बकरियाँ चरा कर अपनी आजीविका कमाते हैं। पति–पत्नी दोनों ही मजदूरी की आस में इधर–उधर भटकते हैं, पर पेट भरने योग्य मजदूरी नहीं मिलती। हालत इतनी दयनीय है कि तन ढकने को भी ढंग का कोई कपड़ा इनके पास नहीं। यही स्थिति परिवार के सभी सदस्यों की है। उम्र बढ़ने के साथ–साथ घर की स्थिति बद से बदतर होती जा रही है। तारा संस्थान ने इन्हें तृप्ति योजना में सम्मिलित करके कुछ राहत पहुँचाने का प्रयास किया है।

'तृप्ति योजना' के अन्तर्गत प्रत्येक बुजुर्ग को 1500/- मूल्य की खाद्य-सामग्री सहायता प्रतिमाह वितरित की जा रही है।

वर्तमान में तृप्ति योजना के अन्तर्गत 252 बुजुर्ग बन्धुओं को प्रतिमाह उपर्युक्त मात्रानुसार खाद्य सामग्री पहुँचाई जा रही है।
आपके सहयोग सौजन्य से यह संख्या 500 करने का लक्ष्य है।

आपसे प्रार्थित खाद्य-सामग्री सहयोग-सौजन्य राशि
रु. 4500 (3 माह), रु. 9000 (6 माह), रु. 18000 (एक वर्ष)

जिन्दगी सिर्फ मुहब्बत नहीं कुछ और भी है
जुल्फ व रुखसार की जन्नत नहीं कुछ और भी है
भूख और प्यास की मारी हुई इस दुनिया में

इश्क ही एक हकीकत नहीं, कुछ और भी है
तुम अगर आँख चुराओ तो ये हक है तुमको
मैंने तुमसे ही नहीं, सबसे मुहब्बत की है।

नये आवासी

श्री औरीलाल राठौर, उम्र 70 वर्ष गाजियाबाद के निवासी हैं। इनकी पत्नी की अप्रैल 2013 में मृत्यु हो गई। चार लड़कियाँ व एक लड़का है एक बेटे की मृत्यु हो गई। सभी शादीशुदा हैं पूड़ी – कचौड़ी बनाने का एक ठेला था। इन्होंने बेटे के लिए गत्ता – बनाने की फैक्टरी लगवाई। बेटे की शादी के बाद घर के हालात बिगड़ते चले गये। इन्होंने अपनी सारी जमीन जायदाद बेच दी। इन्होंने कुछ पैसा तो, जो बेटा मर गया, उसके बच्चों को नकद दे दिया बेटे की मृत्यु होने के बाद बहु घर छोड़ कर चली गईं। कुछ पैसा बड़े बेटे ने हड़प लिया। फिर जब इनकी देने की स्थिति नहीं रही, तो बेटे ने इनकी देखभाल करना बन्द कर दिया। इनकी परेशानियाँ बढ़ती गईं। इनको टीवी के माध्यम से जानकारी मिली। फिर तारा संस्थान का पता किया, और यहाँ आ गये। इनको यहाँ कोई तकलीफ नहीं है। खाना, नाश्ता सभी टाइम पर मिल जाता है। श्री औरीलाल राठौर आनन्द वृद्धाश्रम की व्यवस्था से सन्तुष्ट हैं।

बुज़ुर्ग बन्धु कैरम खेलते हुए...

आप भी यदि किसी असहाय बुजुर्ग बन्धु के लिए 'आनन्द वृद्धाश्रम' में आवास की मानवीय सुविधा उपलब्ध करवाने की सेवा भावना रखते हैं, तो कृपया प्रति बुजुर्ग 5000 रु. प्रतिमाह की दर से अपना दान सहयोग 'तारा संस्थान' को प्रेषित करने की कृपा करें।

01 माह – 5000 रु., 03 माह – 15000 रु., 06 माह – 30000 रु., 01 वर्ष – 60000 रु.

वृद्धाश्रम आवासियों से कोई शुल्क नहीं लिया जाता है। उनके लिए वृद्धाश्रम की सभी सेवाएँ सुविधाएँ – भोजन, वस्त्र, आवास, चिकित्सा देखभाल आदि, सर्वथा निःशुल्क हैं।

मोतियाबिन्द जाँच -ऑपरेशन हेतु चयन शिविर

तारा संस्थान द्वारा निर्धन वृद्ध बन्धुओं की आँखों में सामान्यतः पाये जाने वाले मोतियाबिन्द के निदान और ऑपरेशन हेतु चयन के लिए शिविर आयोजित किये जाते हैं। दूरस्थ एवं ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले मोतियाबिन्द ग्रस्त बन्धुओं की स्थिति अधिक ही पीड़ादायक है, क्योंकि प्रथम तो उन्हें मोतियाबिन्द–ऑपरेशन की सुविधा आसानी से उपलब्ध नहीं है एवं द्वितीय, निर्धनता उनकी चिकित्सा में बड़ा अवरोधक है। तारा संस्थान ने ऐसे निर्धन बन्धुओं की जाँच हेतु शिविर लगाने एवं चयनित मोतियाबिन्द ग्रस्त बन्धुओं के शिविर स्थल के निकटवर्ती कस्बे या शहर में स्थित अधुनातन सुविधाओं से सम्पन्न नेत्र चिकित्सालयों या संस्थान के उदयपुर, दिल्ली व मुम्बई स्थित 'तारा नेत्रालय' में सर्वथा निःशुल्क ऑपरेशन करवाने का कार्य प्रारंभ किया है। निःशुल्क सुविधाओं में मोतियाबिन्द की जाँच, दवाइयाँ, लेंस, ऑपरेशन, चश्मे, रोगियों का परिवहन, भोजन तथा देखभाल आदि सम्मिलित है।

दानदाताओं के सौजन्य से – 7 अप्रैल, 2014 से 25 मई, 2014 के मध्य आयोजित शिविरों का संक्षिप्त विवरण

तारा नेत्रालय, उदयपुर में आयोजित शिविर

दिनांक	सौजन्यकर्त्ता	कुल ओ.पी.डी.	चयनित
20.05.2014	श्रीमती सज्जन देवी – श्री सलेहराज जी मेहता, चैन्नई	118	15

तारा नेत्रालय, दिल्ली में आयोजित शिविर

दिनांक	सौजन्यकर्त्ता	कुल ओ.पी.डी.	चयनित
11.04.2014	श्री राजेष कुमार गर्ग एवं सचिन बुट हाउस, फरीदाबाद (हरियाणा)	105	04

अन्य स्थानों पर आयोजित शिविर

दिनांक	सौजन्यकर्त्ता	कुल ओ.पी.डी.	चयनित
21.05.2014	श्री सत्यनाराण जी उपाध्याय, गाँव – बम्बोरा, उदयपुर	250	04

मोतियाबिन्द जाँच-चयन-शिविर आयोजन एवं 30 ऑपरेशन सहयोग सौजन्य, प्रति शिविर – 151000 रु.
चश्मा जाँच – चश्मा वितरण – दवाई सहयोग राशि, प्रति शिविर – 21000 रु.

दानदाताओं के सौजन्य से आयोजित शिविरों के विवरण व फोटोग्राफ्स

अतिथि का सम्मान
श्री षिवदत्त जी शर्मा, निवासी – द्वारका, नई दिल्ली
दिनांक : 07.04.2014, स्थान : गाँधीनगर, दिल्ली,
ओपीडी : 455, चयनित रोगी : 33, चष्मे : 256, दवाई : 410

दानदाताओं का स्वागत एवं सम्मान
बंषीलापल अरोड़ा, सरदार अवतार सिंह, पं. राजवीर सारस्वत, हरिषा चन्द चुघ, भारत भूषण चुघ, गगन अरोड़ा परिवार, दिनांक : 13.04.2014,
स्थान : नोएडा (यू.पी.), ओपीडी : 445, चयनित रोगी : 10, चष्मे : 180, दवाई : 412

नेत्र रोगी की चिकित्सक द्वारा जाँच
श्रीमती सुनीता देवी सचदेव, निवासी – गोरेगाँव, मुम्बई
दिनांक : 13.04.2014, स्थान : गोरेगाँव (वे.), मुम्बई
ओपीडी : 207, चयनित रोगी : 19, चष्मे : 47, दवाई : 101

षिविर में पधारें अतिथि
श्रीमती दर्षनीदेवी जैन (देवकीमाता) धर्मपत्नी स्व. लाल वीरसैन जैन, दिल्ली, दिनांक : 14.04.2014, स्थान : ऋषभ विहार, दिल्ली
ओपीडी : 201, चयनित रोगी : 06, चष्मे : 115, दवाई : 180

षिविर में उपस्थित रोगी बन्धु
समस्त परिजन (अमीनगर सराय वाले) फर्म – निक्की पोंइट, गाँधीनगर, दिल्ली, दिनांक : 14.04.2014, स्थान : बागपत (यू.पी.)
ओपीडी : 890, चयनित रोगी : 87, चष्मे : 580, दवाई : 810

दान–दाता का सम्मान
सनातन धर्म सभा (रजि.) गगन विहार, दिल्ली – 51
दिनांक : 16.04.2014, स्थान : शाहदरा, दिल्ली
ओपीडी : 329, चयनित रोगी : 10, चष्मे : 122, दवाई : 312

दानदाताओं के सौजन्य से आयोजित शिविरों के विवरण व फोटोग्राफ्स

नेत्र रोगी महिला का पंजीकरण
श्री नवीन कुमार जी निवासी – गुड़गाँव (हरियाणा)
दिनांक : 17.04.2014, स्थान : गुड़गाँव (हरियाणा)
ओपीडी : 96, चयनित रोगी : 08, चष्मे : 55, दवाई : 93

नेत्र रोगी चष्मा वितरण प्रक्रिया में
श्रीमती दर्षनीदेवी जैन (देवकीमाता) धर्मपत्नी स्व. लाल वीरसैन जैन, दिल्ली, दिनांक : 21.04.2014, स्थान : चावड़ी बाजार, दिल्ली
ओपीडी : 262, चयनित रोगी : 11, चष्मे : 105, दवाई : 245

षिविर में जाँच हेतु पंक्ति में रोगी बन्धु
शबानी परिवार, निवासी : वडोदरा (गुजरात), चौकसी परिवार, निवासी : नवसरी (गुजरात) दिनांक : 27.04.2014, स्थान : नाथद्वारा, राजसमन्द (राज.)
ओपीडी : 280, चयनित रोगी : 12, चष्मे : 117, दवाई : 300

चिकित्सक आँखों की जाँच करते हुए
श्री सुभाष जैन, श्री अषोक कुमार जैन, श्री प्रमोद जैन, श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिनांक : 27.04.2014, स्थान : शंकर विहार, दिल्ली
ओपीडी : 472, चयनित रोगी : 08, चष्मे : 337, दवाई : 428

नेत्र रोगी महिला की जाँच
श्रीमती सुषीला देवी एवं श्री संजीव कुमार जी कंसल, निवासी : बुलन्दषहर (यू.पी.), दिनांक : 27.04.2014, स्थान : वैषाली, गाजियाबाद
ओपीडी : 230, चयनित रोगी : 15, चष्मे : 85, दवाई : 215

षिविर में रोगियों का पंजीकरण
श्रीमी सुषमा जैन धर्मपत्नी श्री सत्यभूषण जैन माताश्री – श्री पीयुष जैन, पंकज जैन, दिल्ली, दिनांक : 28.04.2014, स्थान : पटपड़गंज, दिल्ली
ओपीडी : 534, चयनित रोगी : 15, चष्मे : 252, दवाई : 580

दानदाताओं के सौजन्य से आयोजित शिविरों के विवरण व फोटोग्राफ्स

चिकित्सक द्वारा नेत्र रोगी की जाँच
श्रीमती प्रेम जी निझावन, निवासी – जनकपुरी, दिल्ली – 58
दिनांक : 08.05.2014, स्थान : मोहन गार्डन, दिल्ली
ओपीडी : 178, चयनित रोगी : 07, चष्मे : 80, दवाई : 162

पंजीकरण हेतु उपस्थित रोगी बन्धु
श्री एल.आर. भारद्वाज, दरियापुर कला, दिल्ली, श्री गोविन्द लाल बत्रा, लारेंस रोड, दिल्ली, दिनांक : 12.05.2014, स्थान : ऋषभ विहार, दिल्ली
ओपीडी : 205, चयनित रोगी : 11, चष्मे : 156, दवाई : 176

नेत्र रोगी महिला की जाँच
श्री आलोक ग्रेवर, निवासी – सोहना रोड, गुड़गाँव
दिनांक : 15.05.2014, स्थान : गुड़गाँव, हरियाणा
ओपीडी : 131, चयनित रोगी : 06, चष्मे : 60, दवाई : 131

षिविर में रोगियों का पंजीकरण
जय श्री कृष्णा, वेस्ट पंजाबी बाग, नई दिल्ली – 26
दिनांक : 16.05.2014, स्थान : शाहदरा, दिल्ली
ओपीडी : 421, चयनित रोगी : 15, चष्मे : 106, दवाई : 398

जिन्दगी या मौत

''जिन्दा'' थे तो किसी ने पास बैठाया नहीं !
अब खुद मेरे चारो ओर बैठे जा रहे हो !!
पहले किसी ने मेरा हाल ना पूछा !
अब आँसू बहाये जा रहे हो !!
एक रुमाल भेंट नहीं किया जब हम जिंदा थे !
अब शालें और कपड़े ऊपर से ओड़ाये जा रहे हो !!
सबको पता है कि शालें और कपड़े इसके काम के नहीं !
मगर फिर भी बेचारे दुनिया दारी निभाए जा रहें है !!
कभी किसी ने एक वक्त का खाना तक नहीं खिलाया !
अब देसी घी मेरे मुँह में डाले जा रहे हैं !!
''जिन्दगी'' में एक कदम भी साथ ना चल सका कोई !
अब फूलों से सजाकर कंधे पर उठाये जा रहे हैं !!
आज पता चला की मौत – जिन्दगी से बेहतर है !
हम तो बे वजह ही जिन्दगी की चाहत किये जा रहें है !!

गौरी योजना सेवा

(प्रति विधवा महिला सहायता) 01 माह – 1000 रु., 06 माह – 6000 रु., 01 वर्ष – 12000 रु.

ऊँगलियाँ थाम के खुद चलना सिखाया था जिसे राह में छोड़ गया राह पे
लाया पा जिसे, उसने पोछें ही नहीं अष्क मेरी आँखों से, मैंने खुद रोके बहुत देर हँसाया था जिसे

स्व. श्री पोण्टी चड्डा

स्व. सरदार कुलबन्त सिंह चड्डा की प्रेरणा से "The Ponty Chaddha Foundation" के सौजन्य से आयोजित शिविर

षिविर में रजिस्ट्रेषन कराते नेत्र रोगी

शिविर दिनांक	स्थान	ओ.पी.डी.	चयनित रोगी	चश्मे	दवाई
09 मई, 2014	गुरुद्वारा श्री गुरुसिंह सभा (रजि.) प्लोट नं. 181, नवघर रोड, भाईन्दर	155	32	39	54
11 मई, 2014	श्री गुरुनानक दरबार, जैन मंदिर के पास, सेक्टर–6, मीरा रोड (ई.)	165	15	38	67
25 मई, 2014	गुरुद्वारा कलगीधर सभा रमानी कम्पाउण्ड, लिंक रोड, दहीसर (ई.)	147	11	41	37

इन शिविरों में चयनित सभी रोगियों के तारा नेत्रालय, मुम्बई में निःशुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन करवाए गए हैं।

मानवीय सेवा सौजन्य के लिए तारा संस्थान उदयपुर , दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी एवम् वेव इन्फ्राटेक, दिल्ली के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता है एवं स्व. सरदार कुलबन्त सिंह चड्डा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

हार्दिक श्रद्धांजलि

स्व. श्री हुकुमचन्द जी सेठी

स्व. श्रीमती शांतिबाई सेठी

विकलांग सहायता, मूक पशु सहायता, विद्याध्ययन, औषधिदान, आहारदान में चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग करके पुण्यार्जन करते हुए अपनी जीवन संगिनी श्रीमती शांति बाई सेठी के 21 अप्रैल, 2014 को देह त्याग ने पर गया निवासी श्री हुकमचन्द जी सेठी ने भी 22 अप्रैल, 2014 को परलोक के लिए प्रस्थान किया। तारा परिवार इस अनोखे मृत्यु महोत्सव पर युगल दम्पति को श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए, परमपिता परमेश्वर से दिवंगत आत्माओं की चिर शांति, एवं परिजनों को इस अपूरणीय क्षति को सहन करने की शक्ति एवं संबल प्रदान करने की प्रार्थना एवं कामना करता है।

तारा संस्थान में पधारे अतिथि महानुभावों का स्वागत सम्मान

श्री एस.पी. सिंघल (लखनऊ)

श्रीमती लताबेन धर्मपत्नी श्री अश्विन भाई शाह (अहमदाबाद)

श्री एम. के. जैन (विदिशा)

श्री योगेन्द्र कुमार (बैंगलोर)

नेत्र शिविर सौजन्य

मोतियाबिन्द जाँच-चयन-शिविर आयोजन एवं 30 ऑपरेशन सहयोग सौजन्य, प्रति शिविर - 151000 रु.
चश्मा जाँच - चश्मा वितरण - दवाई सहयोग राशि, प्रतिशिविर - 21000 रु.

श्री राजेन्द्र प्रसाद यादव (गुड़गाँव)

श्री सुशील जैन (मेरठ)

सम्मानित होने वाले अतिथि महानुभाव संस्थान की
संस्थापक एवम् अध्यक्ष श्रीमती कल्पना गोयल एवं मुख्य कार्यकारी श्री दीपेश मित्तल के साथ

''तारा परिवार का सौभाग्य कि आपने अभिनन्दन का अवसर प्रदान किया''

सुनीता जी परिहार, जोधपुर

श्री राजेश अग्रवाल, जयपुर

डॉ. के.एल. जैन, जयपुर

एक धर्मगुरु कुछ बच्चों को साहस के संबंध में समझा रहा था। बच्चों ने कहा : कोई उदाहरण दें। वह धर्मगुरु बोला : मान लो, एक पहाड़ी सराय के एक ही कमरे में बारह बच्चे ठहरे हुए हैं। रात्रि बहुत सर्द है। और जब वे दिन भर की यात्रा के बाद थके–मांदे सोने जाते हैं, तो ग्यारह बच्चे तो कंबल ओढ़ कर अपने–अपने बिस्तर में घुस जाते हैं, तो लेकिन एक लड़का उस सर्द रात्रि में भी दिवसांत की अपनी प्रार्थना करने को कमरे के एक कोने में घुटने टेक कर बैठ जाता है। इसे मैं साहस कहता हूँ। क्या यह साहस नहीं है? और तभी एक बच्चा उठा और उसने कहा : मान लें, एक सराय में बारह पादरी ठहरे हुए हैं। ग्यारह पादरी रात्रि में सोने के पहले घुटने टेक कर प्रार्थना करने बैठ गए हैं, लेकिन एक पादरी कंबल ओढ़ कर अपने बिस्तर में सो जाता है! क्या यह भी साहस नहीं है?

मैं नहीं जानता की उस पादरी पर फिर क्या गुजरी... या उसने क्या कह कर उन बच्चों से अपनी जान छुड़ाई। लेकिन एक बात मैं अवश्य ही जानता हूँ कि स्वयं होने की शक्ति का नाम ही साहस है। भीड़ से मुक्त व्यक्ति होने की क्षमता का नाम ही साहस है।

व्यक्ति को व्यक्ति बना देना ही, उसे साहस देना हैं। साहस स्वयं पर विश्वास है। साहस आत्मविश्वास है।

आनन्द वृद्धाश्रम सेवा

(प्रतिबुजुर्ग) 01 माह – 5000 रु., 06 माह – 30000 रु., 01 वर्ष – 60000 रु.

....और कुछ गंभीर मामला

चंदूलाल मारवाड़ी अपने मुनीम की योग्यताओं से बड़े प्रभावित थे। जब मुनीम को कार्य करते हुए पूरे साल हो गए तो उन्होंने उसे बुलवाया और कहा कि श्यामलाल जी, आज आपको हमारे यहाँ काम करते – करते बीस साल हो गए। यह मेरी जिंदगी में पहला मौका है कि इतनी कम तनख्वाह में किसी ने इतने समय तक किसी के यहाँ नौकरी की हो। हम सोचते हैं कि आपके लिए कुछ किया जाए। हम सोचते हैं क्यों न आज से आपको स्वामी भक्ति के उपहार की बतौर श्याम की बजाय श्यामबाबू कह कर बुलाया जाए।

मारवाड़ी सेठ धन्नालाल व्यापार के सिलसिले में एक बार शिमला गए। पहाड़ी रास्ता था। एक खतरनाक ढलान पर अचानक टैक्सी के ब्रेक खराब हो गए और गाड़ी तीव्र गति से नीचे की ओर लुढ़कने लगी। धन्नालाल जोरों से चिल्लाए, अरे भई, रोको – रोको! यह क्या कर रहे हो, क्या जान ही ले लोगे?

ड्राइवर ने घबराए हुए उत्तर दिया, सेठजी, मैं क्या कर सकता हूँ। गाड़ी के ब्रेक फेल हो गए हैं। अब गाड़ी का रुकना संभव नहीं है। भगवान से प्रार्थना करिए, वही चाहे तो रोक दे, कोई चमत्कार कर दे। मैं तो नहीं रोक पा रहा।

सेठ धन्नालाल बोले, अरे मूरख टैक्सी रोकने की कौन कह रहा है, मगर कम से कम मीटर तो बंद कर।

जो मिला, कितना मूल्यवान है!

मैंने सुना है, एक फकीर एक नदी के किनारे बैठा था और एक आदमी नदी से कूदकर आत्महत्या करने का उपाय कर रहा था। उस फकीर ने पूछा कि भाई, ऐसी क्या मूसीबत आ गई? क्यों मरने जाते हो? उस आदमी ने कहा, मेरा दीवाला निकल गया : मरू न तो क्या करूं?फकीर ने कहा, मेरी तरफ देखो, मेरे पास कुछ भी नहीं है। तुम्हारे पास कुछ भी नहीं है। तुम्हारे पास कम–से–कम कुछ तो था कि दीवाला निकला। मेरा तो दीवाला भी नहीं निकल सकता। फिर भी मस्त हूँ! और धन्यवाद दो परमात्मा को। उस आदमी ने कहा, किस बात का धन्यवाद? दीवाला निकलने का?उस फकीर ने कहा : दीवाला निकलने का धन्यवाद नहीं, इस बात का धन्यवाद दो कि तुम्हारा निकल रहा है, कम से कम तुम उन लोगों में से तो नहीं हो जो तुम्हारे कर्जदार हैं, इसका धन्यवाद दो।

फकीर की बात कुछ बेबूझ भी लगी, कुछ जंची भी, वह आदमी पास बैठ गया। कुछ बात आगे बढ़ी। फकीर ने कहा : इसके पहले कि तुम आत्महत्या करो – तुम तो मरने जा ही रहे हो, थोड़े मेरे काम आ जाओ! उस आदमी ने कहा, क्या काम?मुझे तो मरना ही है। फकीर ने कहा, ऐसा करो, मेरे साथ चलो। सम्राट के पास ले गया। सम्राट से उसने कुछ कान में बातचीत की और वह सम्राट ने कहा, ठीक है, दो लाख रुपये दूंगा। उस आदमी ने इतना ही सुना सिर्फ कि दो लाख दूंगा। वह आदमी बोला, किस बात का सौदा हो रहा है?उस फकीर ने कहा : तुम्हारी आंखें बेच रहा हूँ। सम्राट दो लाख देने को तैयार है दो आँखों के। उस आदमी ने कहा : तुमने मुझे मूरख समझा है, दो लाख में अपनी आँखे बेचूंगा? सम्राट ने कहा : तो तीन लाख ले लेना, चार लाख ले लेना, पाँच लाख ले लेना। तू बोल, मुँहमांगे दाम देने को तैयार हूँ। उस आदमी ने कहा, बेचना किसको है, जी। वह भूल ही गया कि आत्महत्या करने जा रहा था। उस फकीर ने कहा : और अभी तू नदी में कूद कर मर रहा था, आँख भी चली जाती, सब चला जाता। यह सम्राट हर चीज लेने को तैयार है – आँख भी लेने को तैयार है, तेरी किडनी भी ले लेगा, और सब चीजें लेने को तैयार है। सम्हाल कर रखवा लेगा, वक्त पर काम पड़ेंगी। और तू तो मर ही रहा है, तुझे बेचने में हर्ज क्या है?

पहली बार उस आदमी को ख्याल आया कि मैं पाँच लाख रुपये में अपनी आँखें बेचने को राजी नहीं हूँ और नदी में कूद कर मरने को राजी था।

हमें होश नहीं है कि जो हमारे पास है, वह कितना मूल्यवान है। जिन्हें इस बात का होश आ जाता है, वे ही लोग धार्मिक हैं।

तृप्ति योजना सेवा

(प्रति बुजुर्ग खाद्य सामग्री सहायता) 01 माह – 1500 रु., 06 माह – 9000 रु., 01 वर्ष – 18000 रु.

साजन के घर जाना है।

बच्चा जब जन्मता है तो प्रायः कहते हैं कि भगवान के घर से आया है। और, जब सांसारिक यात्रा पूरी कर लेता है, तो कहते हैं, भगवान के घर गया है। इस आवागमन के बीच के समय में हमने क्या किया?कभी अपने लक्ष्य को समझने का प्रयत्न नहीं किया। इसलिए मेरे भाई बहन अपने जीवन में बच्चे जैसी निश्चिन्तता निश्छलता धारण करने में अपना समय लगाएँ।

प्रस्तुति,
नवल किशोर गुप्ता, फरीदाबाद

Kindly watch telecast of Tara's Programme on T.V. Channels

'Paras' 8.20 PM to 8.40 PM	'Ashtha Bhajan' 8.40 AM to 9.00 AM	'Colors' 7.00 AM to 7.15 AM USA Time	'Sony UK' 8.30 AM to 9.00 AM UK Time

हार्दिक श्रद्धांजलि

श्री वी.के. मित्तल सीकरी (फरीदाबाद) तारा संस्थान के कर्मठ व सक्रिय सदस्य थे। आप का गत 29.04. 2014 को असमय निधन हो गया है। उनका असमय निधन संस्थान व समाज के लिए अपूरणीय क्षति है। परिवार संस्थान दिवंगत आत्मा की शांति व परिजनों को धैर्य प्रदान करने की प्रभु से कामना करता है।

FCRA

Tara Sansthan is registered under Foreign Contribution Regulation Act (FCRA) with the Govt of India for receiving Donations from Foreign Countries

'Tara' Contact Details - Office

Mumbai Office
Unit No. 1408/7, 1st Floor,
Israni Indl. Estate, Penkarpara,
Nr. Dahisar Check-post,
Thane - 401104 (M.S.) INDIA
Shri Madhusudan Sharma Cell : 09870088688
Shri Bharat Menaria Cell : 08879199188

Delhi Office
WZ-270, Village - Nawada,
Opp. 720, Metro Pillar,
Uttam Nagar,
Delhi - 59
Shri Amit Sharma,
Cell : 09999071302, 09971332943

Surat Office
295, Chandralok Society,
Parwat Gaon,
Surat (Guj.)
Shri Prakash Acharya
Cell : 08866219767 (Guj.)
09829906319 (Raj.)

'Tara' Centre - Incharge

Shri S.N. Sharma
Mumbai (M.S.)
Cell : 09869686830

Smt. Rani Dulani
10-B/B, Viceroy Park, Thakur Village,
Kandiwali (W), Mumbai - 400 101, Cell : 09029643708

Shri Prahlad Rai Singhaniya
Hyderabad (A.P.)
Cell : 09849019051

Shri Pawan Sureka Ji
Madhubani (Bihar)
Cell : 09430085130

Shri Satyanarayan Agrawal
Kolkata
Cell : 09339101002

Shri Bajrang Ji Bansal
Kharsia (CG)
Cell : 09329817446

Smt. Pooja Jain
Saharanpur (UP)
Cell : 09411080614

Shri Naval Kishor Ji Gupta
Faridabad (HR.)
Cell : 09873722657

Shri Anil Vishvnath Godbole
Ujjain (MP)
Cell : 09424506021

Shri Vishnu Sharan Saxena
Bhopal (M.P.)
Cell : 09425050136, 08821825087

Shri Vikas Chaurasia
Jaipur (Raj.)
Cell : 09983560006, 09414473392

Shri Dinesh Taneja
Barelly (UP)
Cell : 09412287735

Area Specific Tara Sadhak

Shri Kamal Didawania
Area Chandigarh, Haryana
Cell : 08950765483 (HR),
09001864783

Shri Bhanwar Devanda
Area Noida, Ghaziabad
Cell : 09660153806,
09649999540

Shri Rameshwar Jat
Area Gurgaon, Faridabad
Cell : 08882662492,
09602554991

Shri Sanjay Choubisa
Shri Gopal Gadri
Area Delhi
Cell : 09602506303, 09887839481

Donors Kindly NOTE

It you do not get any response from any of the above mentioned Mob. numbers, Kindly inform us at Mobile No. 09549399993 and / or 09649399993

NAME AND PLACE OF THE DONORS, WE ARE GRATEFUL TO THEM

Donors are requested kindly to send their photographs alongwith Donation for publishing in TARANSHU

Mr. M.L. & Mrs.Sudershan with Mr. Rajan Gupta, Chandigarh

Mr. Nikhil & Mrs. Surbhi Sancheti Jodhpur (Raj.)

Mr. Devendra Gandhi & Mrs. Nileema Mumbai (MH)

Lt. Mr. Banechanji Nagraj & Lt. Mrs. Kamal Bai Banechanji Baphna

Mr. Ratanlal Taksali & Mrs. Jamnawati Jaipur (Raj.)

Mr. Bhanwar Lal & Mrs. Krishna Machhar Jodhpur Raj.)

Mr. Hanuman Sahay & Mrs. Tharanga Devi Doi Jaipur (Raj.)

Mr. Dashrath Lal & Mrs. Shashirani Agrahari, Jabalpur (MP)

Mr. Krishnkant & Mrs. Snehalata Agnihotri Katani (MP)

Mr. Amar & Mrs. Shubhi Mehrotra Dehradun

Mr. Dinesh & Mrs. Meena Agrawal Agra (UP)

Mr. Ghanshyam & Mrs. Geeta Devi Garg Jaipur (Raj.)

Mr. Arjun D. Hinduja Mumbai - 4

Mr. Subhash Chand Mittal Dehradun

Mr. Arham Garg Ambala City (HR)

Lt. Mrs. Asha Joshi Jalandhar

Sumitra Agrawal

Mr. Dinesh Bhai Surat (Guj.)

Mrs. Jyotsant Ben Surat (Guj.)

Miss. Shatakshi Mehrotra Dehradun

Mr. Aadiyraj Mehrotra Dehradun

Mr. Shyam Mittal Boriwali (W)

Yash Raj Bajaj

Mr. Madan Lal Gandhi Rohtak (Delhi)

Sakshi Maheshwari Kasaganj (UP)

Mrs. Nathi Devi Ji

Mr. Kuldeep Kumar Shastri Sirsa (HR)

Mr. Ashwani Kumar Katani (MP)

Mr. Kashar Bhanushal Thane

Mrs. Pushpa Devi Indore (MP)

Mr. Naresh Kumar Sharma Jaipur

Lt. Mrs. Anand Kunwar Mundara, Jodhpur (Raj.)

Mr. Mahesh Gehlot Mumbai

CSR Assistance for 450 Cataract Surgeries by REC

Inspection visit of Mr. Madhusudan Thakur officer (F & A) on 25th May, 2014

Rural Electrification Coroporation Limited – REC, a Govt of India Enterprise has extended a financial assistance of Rs. 9.00 Lakh for facilitating cataract diagnosis and surgeries of 450 cataract – affected people from weaker sections of society from all over India under Corporate Social Responsibility (CSR) initiative. Tara Sansthan had submitted a detailed project proposal to the REC requesting assistance under SCR to help the cataract afflicted poor people with cost-free surgery. Accordingly, REC took a sympathetic decision by granting an assistance of Rs. 9.00 Lakh to Tara Sansthan. Tara Sansthan has facilitated 450 Cataract surgeries of the poor people with this financial assistance. A detailed follow-up report on this project has been sent to REC, already. Tara Sansthan family is grateful to REC for this generous gesture of humanitarian service to the suffering fellow humans.

INCOME TAX EXEMPTION ON DONATIONS

Donations to Tara Sansthan are TAX-EXEMPT under section 80G and
35 AC / 80GGA of I.T. Act. 1961 at the rate of 50% and 100%

Donation to Tara Sansthan may be sent by cheque/draft drawn in favor of Tara Sansthan, payable at Udaipur, OR may be remitted direct into any of the following Bank Accounts, with caopy of pay-in-slip and Donor's address to Tara Sansthan, Udaipur for expediting Donation Acknowledgment Receipt

Tara Sansthan Bank Account

ICICI Bank (Madhuban) A/c No. 004501021965	**IFS Code : icic0000045**
SBI A/c No. 31840870750	**IFS Code : sbin0011406**
IDBI Bank A/c No. 1166104000009645	**IFS Code : IBKL0001166**
Axis Bank A/c No. 912010025408491	**IFS Code : utib0000097**
HDFC A/c No. 12731450000426	**IFS Code : hdfc0001273**
Canara Bank A/c No. 0169101056462	**IFS Code : cnrb0000169**
Central Bank of India A/c No. 3309973967	**IFS Code : cbin0283505**

For online donations - kindly visit - www.tarasansthan.org
Pan Card No. Tara - AABTT8858J

TARA NETRALAYA

WZ-270, Village - Nawada, Opp. 720,
Metro Pillar, Uttam Nagar, Delhi - 59

DELHI HOSPITAL - Tara Netralaya
+91 9560626661, 011-25357026

TARA NETRALAYA

Unit No. 1408/7, 1st Floor, Israni Indl.
Estate, Penkarpara, Nr. Dahisar Check-post,
Meera Road, Thane - 401107 (M.S.) INDIA

MUMBAI HOSPITAL - Tara Netralaya
Shankar Singh Rathore +91 8452835042
022 - 28480001

तारांशु (हिन्दी - अंग्रेजी) मासिक समाचार पत्र, जून, 2014

RNI. No. - RAJBIL/2011/42978, Postal Reg. No. - RJ/UD/29-102/2012-2014, Dates of Posting - 11th to 18th each month at Udaipur H.O.

'तारांशु' - स्वत्वाधिकारी, श्रीमती कल्पना गोयल द्वारा 240-ए, हिरण मगरी, सेक्टर - 6, उदयपुर (राज.) 313002 से प्रकाशित तथा मुद्रक श्री सत्यप्रकाश कुमार शर्मा द्वारा सागर ऑफसेट प्रिन्टर, इण्डिया प्रा. लि. प्लॉट नं. 518, इकोटेच - III, उद्योग केन्द्र एक्टेंशन - II, ग्रेटर नोएडा, गौतम बुद्ध नगर (उत्तर प्रदेश) में मुद्रित, सम्पादक - श्रीमती कल्पना गोयल

तारा संस्थान के नि:शुल्क मानवीय सेवा प्रकल्प, आपसे प्रार्थित अपेक्षित सहयोग -सौजन्य राशि

नेत्र चिकित्सा सेवा (मोतियाबिन्द ऑपरेशन)

01 ऑपरेशन - 3000 रु., 03 ऑपरेशन - 9000 रु., 06 ऑपरेशन - 18000 रु., 09 ऑपरेशन - 27000 रु., 17 ऑपरेशन - 51000 रु.

नेत्र शिविर सौजन्य

मोतियाबिन्द जाँच-चयन-शिविर आयोजन एवं 30 ऑपरेशन सहयोग सौजन्य, प्रति शिविर - 151000 रु.

चश्मा जाँच - चश्मा वितरण - दवाई सहयोग राशि, प्रतिशिविर - 21000 रु.

तृप्ति योजना सेवा	गौरी योजना सेवा	आनन्द वृद्धाश्रम सेवा
(प्रति बुजुर्ग खाद्य सामग्री सहायता)	(प्रति विधवा महिला सहायता)	(प्रतिबुजुर्ग)
01 माह - 1500 रु.	01 माह - 1000 रु.	01 माह - 5000 रु.
06 माह - 9000 रु.	06 माह - 6000 रु.	06 माह - 30000 रु.
01 वर्ष - 18000 रु.	01 वर्ष - 12000 रु.	01 वर्ष - 60000 रु.

सहयोग राशि - आजीवन संरक्षक 21000 रु., अर्जित ब्याज से दानदाता के नाम से इच्छित दिनांक को प्रतिवर्ष 2 मोतियाबिन्द ऑपरेशन, आजीवन सदस्य 11000 रु., अर्जित ब्याज से दानदाता के नाम से इच्छित दिनांक को प्रतिवर्ष 1 मोतियाबिन्द ऑपरेशन (संचितनिधि में)

दान पर आयकर में छूट : तारा संस्थान को दिया गया दान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G व 35AC/ 80GGA के अन्तर्गत आयकर में 50% व 100% छूट योग्य मान्य है।

निवेदन : कृपया अपना दान - सहयोग नकद या 'तारा संस्थान, उदयपुर' के पक्ष में देय चैक/ड्राफ्ट द्वारा संस्थान के पते पर प्रेषित करने का कष्ट करें, अथवा : अपना दान सहयोग तारा संस्थान के निम्नांकित किसी बैंक खाते में जमा करवा कर 'पे-इन-स्लिप' अपने पते सहित संस्थान को प्रेषित करें ताकि दान - सहयोग प्राप्ति रसीद आपको तत्काल भेजी जा सके।

ICICI Bank (Madhuban) A/c No. 004501021965	IFS Code : icic0000045	HDFC A/c No. 12731450000426	IFS Code : hdfc0001273
SBI A/c No. 31840870750	IFS Code : sbin0011406	Canara Bank A/c No. 0169101056462	IFS Code : cnrb0000169
IDBI Bank A/c No. 1166104000009645	IFS Code : IBKL0001166	Central Bank of India A/c No. 3309973967	IFS Code : cbin0283505
Axis Bank A/c No. 912010025408491	IFS Code : utib0000097	Pan Card No. Tara - AABTT8858J	

'तारा' के सेवा प्रकल्पों का कृपया टी.वी. चैनल्स पर प्रसारण देखें :-

'पारस' रात्रि 8.20 से 8.40 बजे	'आस्था भजन' प्रात: 8.40 से 9.00 बजे	'कलर्स' प्रात: 7.00 से 7.15 बजे यू.एस.ए समय	'सोनी' रात्रि 8.30 से 9.00 बजे यू.के. समय

बुक पोस्ट

बुजुर्गों के लिए...

तारा संस्थान

डीडवाणिया (रतनलाल) नि:शक्तजन सेवा सदन
236, सेक्टर - 6, हिरण मगरी, उदयपुर (राज.) 313002
मो. +91 9549399993, +91 9649399993
Email : info@tarasansthan.org, donation@tarasansthan.org
Website : www.tarasansthan.org